ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-10*November- 2021
Innovation The Research Concept

झुन्झुनूं जिले के नगरीय केंद्रों का उद्भव एवं विकास

Emergence and Development of Urban Centers of Jhunjhunu District

Paper Submission: 12/11/2021, Date of Acceptance: 23/11/2021, Date of Publication: 24/11/2021

ममता यादव
शोधार्थी,
राज ऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर
एवं सहायक आचार्य,
भूगोल विभाग,
स्वामी विवेकानंद राजकीय महाविद्यालय, खेतड़ी, झुझुनूं, राजस्थान, भारत

वेदप्रकाश यादव
सह आचार्य,
भूगोल विभाग,
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर,
राजस्थान, भारत

सारांश

नगर और नगरीय अधिवास भूतल पर मानव निर्मित प्रमुख सांस्कृतिक भूदृश्य है। नगर सेवा केन्द्र के रूप में अहम् भूमिका निभाते हैं। ये उत्पादन एवं वितरण के प्रमुख केन्द्र हैं। जिन नगरों की भौगोलिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियां अनुकूल होती है, वहां उत्पादन एवं वितरण की मात्रा अधिक होती है। औद्योगिक उत्पादन ने नये नगरों के उद्भव एवं नगरों के आकार वृद्धि में योगदान दिया है, वहीं व्यापारिक गतिविधियों एवं सामाजिक केन्द्रों की स्थापना ने भी सहयोग दिया है। इस प्रकार नगरों के उद्भव एवं विकास में अनेक अन्तर्निहित क्रियाओं व शक्तियों का प्रभाव होता है। प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन क्षेत्र झुझुनूं जिले के 18 नगरीय केन्द्रों के उद्भव एवं विकास के बारे में जानकारी प्राप्त की गई है। साथ ही इसके उद्भव एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारकों को ज्ञात किया गया है। जिले के अधिकांश नगर ग्रामीण बस्तियों से बने हैं। इन ग्रामीण बस्तियों में राजा-महाराजाओं ने सुरक्षा की दृष्टि से अनेक किलों, गढ़ों व चहारदीवारी का निर्माण करवाया। जिससे यहां अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यापारिक, प्रशासनिक गतिविधियों के साथ विकास प्रारंभ हुआ। जिले का सबसे प्राचीन नगर झुझुनूं है, जो 10वीं सदी से पहले आबाद था। क्षेत्र की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आवश्यकताओं से स्वतः प्रेरित होकर नगरों का उद्भव एवं विकास होता है। जिले के नगरीय केन्द्रों के उद्भव व विकास में आर्थिक कारक महत्वपूर्ण है, किंतु सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रशासनिक एवं राजनैतिक कारकों ने भी प्रभावित किया है।

Towns and urban settlements are the main man-made cultural landscapes on the ground floor. City plays an important role as a service center. These are the main centers of production and distribution. In cities whose geographical, economic and social conditions are favorable, the volume of production and distribution is high.Industrial production has contributed to the emergence of new cities and the increase in the size of the cities, while commercial activities and the establishment of social centers have also contributed. In this way, the emergence and development of cities is influenced by many inherent actions and forces. In the present research paper, information has been obtained about the origin and development of 18 urban centers of Jhunjhunu district in the study area.Also, the factors affecting its emergence and development have been known. Most of the towns in the district are made up of rural settlements. In these rural settlements, many forts, bastions and boundary walls were built by the kings and emperors from the point of view of security. Due to which development started here with many social, cultural, commercial, administrative activities. The oldest town in the district is Jhunjhunu, which was inhabited before the 10th century. The emergence and development of cities is inspired by the economic, social and cultural needs of the region. Economic factors are important in the emergence and development of urban centers of the district, but social, cultural, administrative and political factors have also influenced them.

मुख्य शब्दः- नगर, सांस्कृतिक भूदृश्य, नगरीय संरचना, वितरण केन्द्र, पेन्टालिस, पोल

Key words: City, Cultural Landscape, Urban Structure, Distribution Center, Pentalis, Pole

प्रस्तावना

बस्ती मानव की सबसे खूबसूरत रचना है। बस्तियों को विशेषताओं के आधार पर ग्रामीण व नगरीय बस्तियों (नगर) में विभाजित किया गया है। भारतीय जनगणना 2011 में नगर को निम्न प्रकार परिभाषित किया गया हैः-

1. समस्त सांविधिक नगर जो किसी नगर निगम, नगर पालिका, कैंटोनमेंट , नोटीफाइड एरिया या टाउन एरिया के अंतर्गत आते हैं।
2. अन्य सभी स्थान जो निम्नांकित तीन मानकों को एक साथ पूरा करते हैं उसे जनगणना नगर की संज्ञा दी जाती हैः-
3. न्यूनतम जनसंख्या 5000
4. कार्यशील पुरूष जनसंख्या का कम से कम 75 प्रतिशत गैर कृषि कार्यों में संलग्न हो।
5. जनसंख्या का घनत्व कम से कम 400 व्यक्ति/वर्ग किमी. (1000 व्यक्ति/वर्ग मील) हो।

नगर मानव के बौद्धिक विकास, तकनीकी, चातुर्य और विशिष्ट जीवन शैली का परिचय देते हैं। नगर उद्भव से अभिप्राय ऐसी बस्ती की उत्पत्ति से है जिसमें नगरीय लक्षण विद्यमान हों। नगर का उद्भव कई रूपों में होता हैः-

1. सर्वप्रथम एक छोटी बस्ती के रूप में उदित होकर धीरे-धीरे नगरीय कार्यों के विकास से।
2. शासक या सरकार द्वारा आरंभ से ही नगर की स्थापना नवीन बस्तियों के रूप में।
3. दो या दो से अधिक बस्तियों के मिलन से।

मानव जीवन चक्र की भांति नगरों का विकास उद्भव के पश्चात् चक्रीय रूप में संपन्न होता है। नगरों की उत्पत्ति से लेकर उसके जीवन की संपूर्ण अवधि में होने वाले क्रमिक परिवर्तनों या अवस्थाओं के विविध स्वरूपों को नगर विकास में सम्मिलित किया जाता है।

नगरों का उद्भव एवं विकास भौगोलिक, आर्थिक व सामाजिक परिस्थितियों का परिणाम होता है। प्राचीन नगरों से लेकर आधुनिक नगरों के उद्भव एवं विकास पर आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रशासनिक एवं राजनैतिक कारकों का प्रभाव पड़ता है। नगरों के उद्भव का अध्ययन नगरीय संरचना, कार्यों, प्रतिक्रियाओं, संबंधों एवं नियोजन आदि पहलुओं के लिए आवश्यक है क्योंकि प्राकृतिक भूदृश्यों के विकास प्रक्रम के अध्ययन में 'वर्तमान भूत की कुंजी होती है', उसी प्रकार नगरीय भूदृश्यों के अध्ययन में 'भूत वर्तमान की कुंजी होती है।' नगरों की उत्पत्ति एवं विकास को भौतिक एवं मानवीय दोनों कारक प्रभावित करते हैं। प्राकृतिक स्थल, जलवायु, प्राकृतिक परिस्थिति एवं जलापूर्ति आदि भौतिक कारक नगर उद्भव के प्रारंभिक आधार हैं। यद्यपि नगर मानव निर्मित रचना है इसलिए मानवीय कारकों का उद्भव एवं विकास में विशेष योगदान होता है। इस प्रकार मानवीय कारक एवं भौतिक कारक आपस में क्रिया-प्रतिक्रिया कर नगरों के विकास में सहयोग करते है।

प्राचीन समय के नगर नदी घाटी के नगर थे, इन नगरों का अभ्युदय नदियों की समतल, उपजाऊ और सिंचित भूमि पर अधिक उत्पादन के संचय, संरक्षण एवं वितरण के लिए हुआ। मध्यकाल के नगरों के उद्भव में युद्ध, व्यापार, परिवहन, धर्म, शिक्षा और कृषि विकास आदि कारकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आधुनिक काल में शक्ति संसाधनों, परिवहन साधनों की प्रगति, उद्योगों का केन्द्रीकरण, व्यापारिक गतिविधियों, प्रशासनिक कार्यो, सामाजिक चेतना और सामरिक स्थिति में बदलाव आदि ने उल्लेखनीय योगदान दिया है।

अध्ययन क्षेत्र

झुझुनूं जिला राजस्थान के शेखावाटी प्रदेश का हिस्सा है, जो कि उत्तरी-पूर्वी भाग में स्थित है। जिले का अंक्षाशीय विस्तार 27°38' से 28°31' उत्तरी अक्षांश के मध्य एवं देशान्तरीय विस्तार 75°02' पूर्वी देशान्तर से 76°06' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जिले का कुल क्षेत्रफल 5928 वर्ग किलोमीटर है, जो राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 1.73 प्रतिशत है। क्षेत्रफल की दृष्टि से राज्य में 21 वां स्थान रखता है। यह एक अर्द्ध शुष्क मरूस्थलीय क्षेत्र है। जिले का उत्तरी व पश्चिमी भाग रेतीला है। जबकि दक्षिणी पूर्वी भाग में अरावली पर्वत श्रृंखला स्थित है। झुझुनूं जिले की सीमा उत्तर-पश्चिम में चूरू जिला पश्चिम, दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम में सीकर जिला तथा उत्तर-पूर्व में हरियाणा राज्य के भिवानी व महेन्द्रगढ़ जिले से लगती है।

झुझुनूं जिला अर्द्ध शुष्क मरूस्थलीय क्षेत्र में स्थित होने से यहां की जलवायु गर्म है जिसमें शीत, ग्रीष्म व वर्षा तीन ऋतुएं स्पष्ट दिखायी पड़ती हैं। यहां अधिकतम तापमान जून माह में तथा न्यूनतम तापमान दिसम्बर व जनवरी माह में अंकित किया जाता है। जिले में वर्षा दक्षिण-पश्चिम मानसून से जुलाई से दिसम्बर में होती है। यहां उष्ण कटिबंधीय कंटीले वनों की वनस्पति मिलती है, जिसमें शीशम , जांटी या खेजड़ी, खेर, गुलेर, कैर, कीकर, जाल, पलाश , रोहिड़ा, बबूल आदि वृक्ष मिलते हैं। यहां मरूस्थलीय, लाल मरूस्थलीय मृदाएं पायी जाती है। यहां बालूका स्तूप बहुतायत में मिलते हैं।

जिले की एकमात्र वर्षावाही कांतली नदी मध्य भाग से गुजरती है। झुझुनूं जिला हवेलियों, तकनीकी शिक्षा व तांबा उत्खनन के लिए प्रसिद्ध है। प्रशासनिक दृष्टि से यहां 8 तहसीलें (झुझुनूं, चिड़ावा, बुहाना, खेतडी, नवलगढ़, उदपुरवाटी, मलसीसर, सुरजगढ) है। 2011 की जनसंख्या के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 2137045 है। जिसमें नगरीय जनसंख्या 489079 है जो कुल जनसंख्या की 22.89 प्रतिशत है। जिले में 2011 की जनगणना के अनुसार खेतड़ी, पिलानी, झुझुनूं , बबाई, बगड, बिसाऊ, चिड़ावा, गोठड़ा, इस्लामपुर, अलसीसर, मंडावा, मुकुन्दगढ़, नवलगढ़, नुआं, सिंघाना, उदयपुरवाटी, विद्याविहार आदि 18 नगरीय बस्तियां स्थित है।

उद्देश्य

1. नगरीय केन्द्रों के उद्भव एवं विकास की जानकारी प्राप्त करना।
2. नगरों के उद्भव एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारकों को ज्ञात करना।

नगरीय केन्द्रों का उद्भव एवं विकास

अध्ययन क्षेत्र झुझुनूं जिले के नगरीय केंद्रों का आविर्भाव छोटी बस्तियों के क्रमिक विकास से हुआ है। यहां व्यापारिक गतिविधियां, शिक्षा, किला, महल, संगम स्थल, खनन, प्रशासनिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक आदि तत्वों ने नगरीय केन्द्रों के उद्भव में आधार का कार्य किया है। इस प्रकार नगरीय बस्तियों का विकास विभिन्न जटिल क्रियाओं पर आधारित होता है। नगरीय केन्द्रों के नामकरण विश्लेषण से उनकी उत्पत्ति के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

अध्ययन क्षेत्र में झुझुनूं एक प्राचीन नगर है। इसका इतिहास अत्यंत प्राचीन है। ताम्र सभ्यता गणेश्वर व खेतड़ी की ताम्बे की खान झुझुनूं के सांस्कृतिक व ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के प्रमाण हैं। रामायण और

महाभारत काल में भी इस क्षेत्र का अस्तित्व था। झुझुनूं प्राचीन युग से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक अनेक राजवंशों एवं शासकों के अधीन रहा है। लेकिन प्रामाणिकता के अभाव में यह स्पष्ट नहीं होता है कि झुझुनूं को कब और किसने बसाया।

इतिहासवेत्ता हरनाथ सिंह डूंडलोद ने अपनी पुस्तक ' झुझुणूं ' में लिखा कि झुझुनूं की स्थापना गुर्जरकाल में 7वीं सदी में हुई है। मोहनसिंह जैन मुनियों की पदावली के आधार पर मानते हैं कि झुझुनूं 8वीं सदी से आबाद है।[1]

आठवीं शताब्दी में चौहानों के शासनकाल के अध्ययन में झुझुनूं के अस्तित्व का उल्लेख मिलता है। श्री अमरचन्द नाहटा के अनुसार झुझुनूं 10वीं सदी में बड़ी आबादी वाला नगर था। सन् 1089 में कविवर बीर ने 'जम्बू चरित्र' काव्य में झुझुनूं के उत्तुंग जैन मुनियों का उल्लेख किया है।

वि.सं. 1045 में झुझुनूं का राजा सिद्धराज चौहान था। रघुवंशी प्रतिहारों के बाद इस क्षेत्र का शासन चौहानों के अधिकार में था।[2] जनश्रुति के अनुसार झुझुनूं को बसाने वाला झुझा जाट, जो नेहरा गौत्र का था। इन्होंने नेहरा पहाड़ के उत्तर में अपनी ढ़ाणी बसाई। यहीं से झुझुनूं नगर के उद्भव एवं विकास की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। कायमखानी नवाबों के शासनकाल में यहां समस तालाब, गढ़, मस्जिद आदि निर्माण कार्य हुए। झुझुनूं शहर का विकास पुराने कस्बे के दक्षिण में रेल लाईन तक हुआ है। IDSMT स्कीम की आवासीय योजना के कारण नेहरा पहाड़ के पश्चिम में नगर का विकास हुआ है। रीको द्वारा झुझुनूं नगर में ऑटोमोबाइल क्षेत्र को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। स्वतंत्रता पश्चात् झुझुनूं को जिले के रूप में घोषित किये जाने पर, यहां प्रशासनिक कार्यालयों, संस्थानों एवं औद्योगिक इकाईयों की स्थापना आदि विकास कार्य संपन्न हुए हैं।

उदयपुरवाटी एक स्वतंत्र परगना था। यह पहाड़ों से घिरे हुए 45 ग्रामों का समूह था जो 'पेन्टालिस' के नाम से जाना जाता था। उदयपुरवाटी को शहंशाह अकबर ने राजा रामसर दरबारी को शासन करने हेतु दिया था, लेकिन ठाकुर राजा भोजराज ने इस पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। राजा भोजराज ने इसको अपना मंत्रणा स्थल बनाया। स्वतंत्रता के पश्चात् यहां 1952 में नगरपालिका, 1954-55 में चिकित्सा संस्था, 1960-61 में SBI बैंक की स्थापना, 1959 में पंचायत समिति की स्थापना आदि का विकास हुआ है।

शार्दूल सिंह के पुत्र ठाकुर नवलसिंह ने 1737 में रोहिली नामक स्थान पर किला बनाया और उसका नाम नवलगढ़ रखा। नवलगढ़ चारों तरफ ऊंचे परकोटे से सुरक्षित था तथा चारों दिशाओं में चार पोल (दरवाजे) थे। व्यापारिक गतिविधियों के कारण शहर ने अधिक संपन्नता प्राप्त की। बीसवीं शताब्दी के बाद नगर का विकास परकोटे के बाहर प्रारम्भ हुआ। 1922-23 में रेलवे लाईन के आने से शहर का विकास पश्चिम दिशा में होने लगा। यहां 1945 में नगरपालिका का गठन हुआ। स्वतंत्रता के पश्चात् यहां तीव्र गति से विकास हुआ है। सीकर-झुझुनूं बाईपास रोड़ बनने से नगर के विकास को गति मिली है। वर्तमान में नवलगढ़ एक गतिशील नगर के रूप उभर रहा है।

ठाकुर नवल सिंह ने मांडू जाट के निवास स्थान पर किले का निर्माण कर उसका नाम विक्रम संवत् 1812 (1753ई.) में मंडावा रखा।[3] मांडू जाट ने मंडावा गांव की स्थापना 1740ई. में की थी। प्रारम्भ में इस स्थान को मांडू की ढाणी, मांडू का बास और मांडूवास के नाम से जाना जाता था जो मंडुवा, मंडवा और अंत में मंडावा में बदल गया।[4]

यहां पर्यटन विकास के कारण वाणिज्यिक गतिविधियां तीव्र हुई है जिससे नगर के विकास में सहायता मिली है। यहां वर्ष 1945 में नगरपालिका बोर्ड की स्थापना की गई।

केसरी सिंह ने 'विशाला जाट की ढाणी' पर एक महल और रक्षा के लिए चहारदीवारी का निर्माण कराया और इस निवास स्थान को संवत 1812 (1755ई.) में बिसाऊ नाम दिया।[5] बिसाऊ शेखावाटी जिला कमेटी के अधीन एक टाउन कमेटी थी। वर्ष 1945 में यहां नगरपालिका की स्थापना की गई। बिसाऊ के विकास क्रम में 1923 में प्रथम हरिजन विद्यालय, 1951 में डाक एवं तारघर, 1956 में जलदाय विभाग द्वारा जलापूर्ति, 1958 में राजस्थान साहित्य समिति की स्थापना, 1969 में पंजाब नेशनल बैंक, 1971 में विद्युत आपूर्ति आदि ने उल्लेखनीय योगदान दिया है। 1957 से शुरू रेलमार्ग ने विकास की गति को बढा दिया है।

बगड़ शेखावाटी क्षेत्र का 250 वर्ष पुराना कस्बा है, जिसकी स्थापना वि.सं. 1832 (1775ई.) मे की गई। बगड़ गांव की स्थापना चाहर जाटों ने की जो चारावास से आए थे। शिक्षा नगरी के रूप में प्रसिद्ध बगड़ के विकास में अनेक जन-प्रतिनिधियों, धनाढ्य परिवारों, समाजसेवियों का योगदान है। शैक्षणिक संस्थाओं और स्वास्थ्य सुविधाओं ने नगर के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। बगड़ को 1951 में नगर की श्रेणी में शामिल किया गया है।

पंचपाना के अनुसार केसरी सिंह के अधीन सूरजगढ़ पहले अरिचा नामक गांव के रूप में आदिवाल ब्राह्मणों ने स्थापित किया था। सूरजमल ने यहां 1780 में किले का निर्माण कर उसको सूरजगढ़ नाम प्रदान किया। यहां 1948 में नगरपालिका बोर्ड की स्थापना की गई। कृषि बाहुल्य पृष्ठ क्षेत्र के उत्पादन ने कस्बे में व्यावसायिक गतिविधियों को बढावा दिया, जिससे नगर के विकास को गति मिली।

स्वामी विवेकानंद की नगरी खेतडी को राजा खेत सिंह जी निर्वाण ने बसाया था, लेकिन इसका शैशव काल 1812ई. में अरावली पर्वत श्रृंखला की चोटी पर भोपालगढ़ किले की स्थापना के साथ प्रारंभ हुआ। राजवंशों

ने खेतड़ी को प्रशासनिक एवं सैनिक छावनी के रूप में प्रयोग किया है। नगर का प्रारंभिक विकास पहाडी की तलहटी में हुआ। नगर का सर्वाधिक विकास शेखावत राजा अजीत सिंह के काल में हुआ। इन्होंने यहां संस्कृत विद्यालय, बाजार, मंदिरों, ब्रह्मचर्य आश्रम स्कूल एवं रामकृष्ण मिशन आश्रम की स्थापना आदि विकास कार्य किये हैं। सन् 1925 में नगरपालिका की स्थापना की गई। स्वतंत्रता पश्चात् तहसील मुख्यालय के रूप यहां ITI, सरकारी अस्पताल, तहसील मुख्यालय एवं महाविद्यालय आदि की स्थापना हुई।

खेतड़ी का द्वितीय चरण का विकास 1967 में खेतड़ी तांबा परियोजना की स्थापना के साथ शुरू हुआ। इस परियोजना ने खेतड़ी को विश्व मानचित्र पर स्थापित कर दिया। इसके कारण परियोजना में कार्य करने वाले कर्मचारियों के लिए परियोजना नगर के रूप में गोठड़ा की स्थापना हुई। इसको 1971 में नगर श्रेणी में शामिल किया गया।

सिंघाना ग्राम के आस-पास यातायात साधनों के विकास से तृतीय चरण प्रारंभ हुआ। इस तरह खेतड़ी नगर का विकास तीन चरणों में हुआ है।

1860 में ठाकुर मुकुंद सिंह साहिब एवं सेठ सेवकराम गुवालेवाला ने मिलकर मुकुन्दगढ़ की स्थापना की थी, जिसका मूल नाम 'शाहबसार' था। वर्ष 1948 में नगरपालिका बोर्ड की स्थापना की गई। मुकुन्दगढ़ को 1951 की जनगणना में नगर की सूची में वर्गीकृत किया गया। वर्ष 1971 से 2011 के बीच व्यापारिक गतिविधियों, शैक्षणिक एवं चिकित्सा संस्थाओं, मंडी की स्थापना के कारण नगर का मुख्य विकास उत्तर व दक्षिण दिशा की ओर तीव्र गति से हुआ है।

देश-दुनिया में शिक्षा नगरी के रूप में ख्याति प्राप्त पिलानी औद्योगिक घराना बिड़ला की जन्मस्थली है। करीब 200वर्षों पूर्व यहां अलग-अलग समाज की दो बस्तियां (पिलानिया वास, नेरावास) थी, जिनको दलेलसिंह ने मिलाकर यहां दलेलगढ़ का निर्माण करवाया। जिसके बाद इसका नाम दलेलगढ़ हो गया। दलेलगढ़ पर कुछ समय पश्चात् शत्रुओं का आक्रमण होने पर पिलानी समाज के एक व्यक्ति ने अद्भुत शौर्य का प्रदर्शन करते हुए जीत दिलाई। इसके बाद इस व्यक्ति के नाम पर पिलानी का नाम रखा गया।

पिलानी में स्वतंत्रतापूर्व 1903ई. में एक संस्कृत पाठशाला की स्थापना की गई जो वर्तमान में संस्कृत महाविद्यालय के रूप में कार्यरत है। 1953 में सेंट्रल इलैक्ट्रोनिक इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान (सीरी) व वर्ष 1964 में प्रसिद्ध बिड़ला तकनीकी एवं विज्ञान संस्थान (BITS) आदि राष्ट्रीय महत्व के तकनीकी शिक्षा के संस्थानों की स्थापना की गई। पिलानी में वर्ष 1944 में नगरपालिका की स्थापना हुई। वर्ष 1959 में सीरी में बढ़ती विद्यार्थियों की संख्या एवं परिसर के रखरखाव के कारण एक नयी नगरपालिका 'विद्याविहार' 27 जुलाई 1959 में स्थापित की गई। विद्याविहार को 1961 की जनगणना में कस्बे की सूची में शामिल किया गया। पिलानी व विद्याविहार का आर्थिक आधार शिक्षा, व्यापार एवं वाणिज्यिक गतिविधियों पर टिका हुआ है।

खेतड़ी ठिकाने के अधीन रहे चिड़ावा को मुगल, राजपूत राजाओं ने समय-समय पर इसे अपने राज्य का हिस्सा बनाया। 1925 में नगरपालिका की स्थापना की गई। आवागमन की सुविधा, शैक्षणिक संस्थाओं, रीको द्वारा विकसित औद्योगिक क्षेत्र के कारण चिड़ावा के विकास को दिशा मिली है।

सिंघाना, मलसीसर, नुआं, इस्लामपुर और बबाई को वर्ष 2011 की जनगणना में नगर की संज्ञा दी गई है। मलसीसर गांव की स्थापना शार्दूलसिंह के पुत्र महासिंह ने विक्रम संवत् 1805 में की थी।

नगरों के उद्भव एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारक

नगरीय केन्द्रों का उद्भव एवं विकास क्षेत्र की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आवश्यकताओं से स्वतः प्रेरित होता है। जबकि कुछ नगरीय केन्द्रों का आविर्भाव एवं विकास प्रशासनिक मुख्यालय, सुरक्षा केन्द्र, किला, महल, राजनैतिक प्रभाव केन्द्र आदि कृत्रिम शक्तियों के परिणामस्वरूप होता है। कई केन्द्रों का आविर्भाव एवं विकास प्राकृतिक एवं मानवीय दोनों शक्तियों के संयुक्त प्रभाव से भी होता है।[7] अध्ययन क्षेत्र के नगरीय केन्द्रों के उद्भव एवं विकास में अनेक कारकों ने कार्य किया है। जिले में झुझुनूं, उदयपुरवाटी, खेतड़ी, बिसाऊ, नवलगढ़, मलसीसर, सूरजगढ़, मुकुंदगढ़, मंडावा आदि में अठारहवीं शताब्दी में सुरक्षा संबंधी कारणों से अनेक गढ़ों, किलों व चहारदीवारी का निर्माण हुआ। यहां के नगरीय केन्द्रों में किलों व गढ़ों की केन्द्रीय स्थिति से स्पष्ट होता है कि इन्होंने नगरों के उद्भव एवं विकास में केन्द्रोन्मुखी शक्ति के रूप में कार्य किया है। कालान्तर में उनके चारों तरफ अनेक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, व्यापारिक गतिविधियों का जन्म हुआ जिससे अनेक विकास कार्यों का शुभारंभ हुआ।

अध्ययन क्षेत्र के नगरीय केन्द्र अपने कृषि प्रधान ग्रामीण पृष्ठ क्षेत्रों के लिए वाणिज्यिक केंद्रों के रूप में कार्य करते है। ग्रामीण क्षेत्रों के कृषि उत्पादन, आधिक्य के भंडारण, संरक्षण और वितरण आदि व्यावसायिक गतिविधियां नगरों के उद्भव व विकास को प्रोत्साहित करती है। झुझुनूं नगर, चिड़ावा, सूरजगढ़, मुकुन्दगढ़, नवलगढ़, मंडावा, बिसाऊ आदि के विकास में व्यापारिक एवं वाणिज्यिक कारकों की महती भूमिका रही है। यहां कृषि उपज मंडी एवं अन्य सामानों की मंडी की स्थापना से नगरीय जनसंख्या में वृद्धि को बढ़ावा मिला।

झुझुनूं जिले ने अपनी शैक्षणिक संस्थाओं के कारण शिक्षा के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनायी है। यहां राष्ट्रीय महत्व की सीरी एवं बिट्स जैसी तकनीकी शिक्षण संस्थान स्थित हैं। इनके कारण पिलानी व

विद्याविहार को देश में प्रसिद्धि मिली है। बगड़ व चिड़ावा, झुझुनूं आदि केन्द्रों के विकास में शैक्षणिक गतिविधियों का भरपूर योगदान है।

तांबा खनिज की उपलब्धता ने झुझुनूं जिले के खेतड़ी, गोठड़ा व सिंघाना आदि नगरों के उद्भव व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। यहां की अरावली पर्वतमाला में तांबे के अथाह भंडार स्थित है, जहां से मौर्यकाल में तांबा खनन के प्रमाण मिले हैं। 1967 में भारत सरकार की हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड की स्थापना ने नगरों के विकास को द्रुत गति प्रदान की। परियोजना नगर के रूप में गोठड़ा का उद्भव हुआ।

प्राचीन समय में मध्य एशिया व पश्चिमी एशिया से होने वाले व्यापार का कारवां मार्ग झुझुनूं जिले से गुजरता है। जिसके कारण नवलगढ़, मुकुन्दगढ़, सिंघाना, चिड़ावा आदि में व्यापारिक गतिविधियों में बढ़ोतरी होने से विकास तेजी से हुआ। झुझुनूं, सिंघाना, बिसाऊ के विकास में भी यातायात के साधनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

जिला व तहसील मुख्यालय होने के कारण झुझुनूं शहर, चिड़ावा, खेतड़ी, उदयपुरवाटी, सूरजगढ़, नवलगढ़, मलसीसर आदि में प्रशासनिक कार्यों की सुविधाओं के कारण यहां ग्रामीण क्षेत्रों से लोग आते हैं जिससे नगरों की गतिविधियां प्रभावित होती हैं।

झुझुनूं के अनेक नगरीय केन्द्र देश के नामी-गिरामी उद्योगपतियों की जन्मस्थली है, जिन्होंने अपनी व्यापारिक कुशलता से विश्व पटल पर झुझुनूं का नाम रोशन किया है। मोरारका, गोयनका, पोद्दार (नवलगढ़), बिड़ला (पिलानी), डालमिया (चिड़ावा), पीरामल, रूंगटा (बगड़), सिंघानिया (बिसाऊ), खेतान (झुझुनूं) आदि उद्योगपतियों ने अपने जन्मस्थलों पर अनेक विकास कार्य करवाये हैं। इन विकास कार्यों ने नगरीय केन्द्रों की प्रगति को बढ़ा दिया है।

ऐतिहासिक भवन एवं विरासत स्थलों के रूप में यहां अनेक हवेलियां, छतरियां, मंदिर, जोहड़ (तालाब) आदि स्थित है, जिन्होंने देश-विदेश के पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित किया है। यहां की हवेलियों ने पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देकर मंडावा, नवलगढ़, बिसाऊ, झुझुनूं, सूरजगढ़, चिड़ावा आदि के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। यह हवेलियां अपने कलात्मक भित्ति-चित्रों (फ्रेस्कोज), उत्किर्णित विशाल दरवाजों, अलंकृत मेहराबों एवं भव्य आकार के कारण विश्व प्रसिद्ध है।

निष्कर्ष

अध्ययन क्षेत्र झुझुनूं जिले के नगरीय केन्द्रों का उद्भव प्रायः छोटी बस्ती के रूप में हुआ जिनमें समय के साथ नगरीय कार्यों का प्रवेश एवं विस्तार होता गया। विकास कार्यों से नगर केन्द्रों का स्वरूप बदलता गया। विकास की जटिल क्रियाओं से यहां अनेक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक भू-दृश्य विकसित हुए। नगरीय केन्द्रों के उद्भव एवं विकास में सैन्य कारक, खनिजों की उपलब्धता, व्यापारिक एवं वाणिज्यिक, शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना, यातायात साधनों का प्रभाव, ऐतिहासिक भवन एवं विरासत स्थल, प्रशासनिक, औद्योगिक, धार्मिक एवं उद्योगपतियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जिनमें प्रशासनिक इकाइयों, सड़क विकास एवं व्यापारिक गतिविधियों का योगदान उल्लेखनीय है। रीको द्वारा झुझुनूं, पिलानी, चिड़ावा व सिंघाना में औद्योगिक क्षेत्र स्थापित करने से विकास को सुदृढ़ आकार मिलेगा। अध्ययन क्षेत्र के नगरीय केन्द्रों में बैंक, शैक्षणिक सुविधाओं, धर्मशाला, पुस्तकालय, चिकित्सालय एवं परिवहन केन्द्रों ने विकास के सुअवसर प्रदान किये हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *राजेन्द्र कस्वां (2006): 'नेहरा पहाड़ बोलता' मानव कल्याण संस्था, झुझुनूं पृ.1*
2. *रघुनाथ सिंह शेखावत : झुझुनूं मंडल का इतिहास, पृ.21*
3. *रतनलाल मिश्राः शेखावाटी का नवीन इतिहास' कुटीर प्रकाशन, मंडावा, झुझुनूं (1998) पृ.171*
4. *डॉ. रघुवीर सिंह मनोहरः राजस्थान के प्राचीन नगर और कस्बे, 2010, पृ.217*
5. *रतनलाल मिश्राः 'शेखावाटी का नवीन इतिहास' कुटीर प्रकाशन, मंडावा, झुझुनूं (1998) पृ.171*
6. *शेखावाटी भास्कर, चिड़ावा भास्कर, 29.09.2020*
7. *Garnier, J.B. & G. Chabat (1967) : Urban Geography, P. 105*